बेटी बचाओ-सशक्त बनाओ

पत्नी - क्या बात है रोहित आज बड़े जल्दी में हो?

पति - अरे तुम्हारी सोनोग्राफी रिपोर्ट आनी है ना।

पत्नी – रिपोर्ट से क्या होता है? बेटा हो या बेटी, बस स्वस्थ होना चाहिए।

पति - बेटा ही होगा। अरे मैंने तो अपने बेटे का नाम भी सोच लिया है। सन्नी, सूरज की तरह चमकता रहेगा।

पत्नी - और अगर बेटी हुई तो?

पति - नहीं बाबा नहीं, मुझे बेटी वेटी नहीं चाहिए।

पत्नी - क्यों?

पति - अरे मैं घर के खर्चे उठाऊगां, घर की ई.एम.आई. चुकाउंगा या उसके दहेज के लिए पैसा बचाऊगां?

पत्नी - अरे जमाना बदल गया है। आने वाले टाईम में दहेज-वहेज का चक्कर ही नहीं रहेगा।

पति - सब कहने की बाते हैं। आजकल का माहौल देखा है, कितना खराब हो गया है। अरे ऐसे माहौल में बेटी को सम्भालना आसान है क्या? तुम आफिस जाती हो। मैं आफिस जाता हूँ। पीछे सम्भालेगा कौन? अरे कुछ ऊँच नीच हो गया तो जमाने को क्या मुँह दिखायेंगे ?

पत्नी - ओफो ! मेरे मम्मी पापा भी तो जॉब करते थे। उन्होंने भी तो मुझे सम्भाला है।

पति- पहले जमाना और था। ज्वाईन्ट फैमिली होती थी। अरे सोलो फैमिली में लड़की को पालना आसान है क्या? नहीं भई नहीं, मुझे टेंशन नहीं चाहिए।

पत्नी - रोहित आप पढ़े-लिखे होकर भी ऐसी बातें कर रहे हो?

पति - पढ़ा लिखा हूँ तभी ऐसी बातें कर रहा हूँ । सारी उम्र स्ट्रगल करके तब यहाँ तक पहुँचा हूँ। अब बेटी का बोझ सिर पे ले लिया, तो, तो बची-खुची जिंदगी भी स्ट्रगल में गुजारनी पढ़ेगी।

पत्नी - आप बेटी को बोझ क्यों समझते रहे हैं ? आज कल लड़का - लड़की में फर्क ही क्या है?

पति - फर्क है। लड़का, लड़का होता है और लड़की, लड़की। लड़का वंश बढ़ाता है और लड़की टेंशन।

(डोर बेल बजती है।)

नौकर - साहब,डॉक्टर साहब ने ये रिपोर्ट भेजी है।

पत्नी - ओह! रिर्पोट आ हई। बताओ ना, बताओ ना क्या है रिर्पोट में?

पति - वही जिसका डर था। तुम्हारे पेट में बेटी है।

पत्नी - तो,तो इसमें परेशान होने की क्या बात है? मैं तो बेटी ही चाहती थी।

पति - (चिल्लाकर) पर मैं नहीं चाहता ना बेटी। मुझे नहीं चाहिए बेटी। समझती क्यों नहीं? आजकल बेटी को पालना,पढ़ाना,शादी करना – सब बहुत मुश्किल है।

पत्नी - (रोती है) रोहित मैं ..म.. मैं सम्भालूंगी हां। मैं डबल मेहनत करुंगी, पर प्लीज,प्लीज रोहित ऐसा मत करो। प्लीज रोहित ऐसा मत कहो।

पति - बस । एक बार बोला ना, बेटी नहीं चाहिए, मतलब नहीं चाहिए।

पत्नी – पर, पर रोहित

पति - चूज वन। बेटी या मैं।

पत्नी - आह ! आह! आ! रोहित,रोहित प्लीज रोहित। रोहित मेरी बात सुन लो रोहित प्ल्ल्लीज। मेरी बात समझने की कोशिश क्यों नहीं करते। मेरे लिए तुम दोनों ही बराबर हो। अब,अब मैं किसी एक को कैसे चुन सकती हूँ रोहितत्त्त। (रोती है) रोहित प्लीज। अब, अब मैं तुम्हें कैसे समझाऊँ ? कैसे समझाऊँ मैं तुमको? (रोती है)

(गीत बजता है)
बेटी तो भोलेनाथ की रहमत... .....उसपे इतना सितम तुम ना करना
हर बेटी है बड़ी प्यारी .....उसपे कुर्बान है दुनिया सारी
उसका हर रूप है बेहद सुन्दर ..... उसके हर रुप पे जग है वारी
वो वरदान बन कर है आती ..... उससे झोली को तुम भर लो
जिसने जीवन जगत को दिया है ..... उसके जीवन की रक्षा तुम करलो
बेटी तो भोलेनाथ की रहमत .... उसपे इतना सितम तुम ना करो
बेटी तो भोलेनाथ की रहमत .... उसपे इतना सितम तुम ना करो ।

बेटी का भ्रुण - मां,मां, मां .... अभी तो भगवान ने मेरे हाथों पे किस्मत की लकीरें भी नहीं बनाई। और उनसे पहले ही आप सब ने मेरी तकदीर का फैसला सुना दिया। मां मुझे जी लेने दो। अपनी कसम मैं आपको कभी तंग नहीं करुगीं। जब,जब खाना खाने के बाद आप सब मीठा खा रहे होंगे,तब मैं रसोई में जाकर सारे बर्तन साफ कर दिया करूगीं। मां मेरी स्कूल फीस की चिंता मत करना। मैं भैया की किताबों से अपने आप ही पढ़ लिख जाऊगीं और हां पापा से कहना मेरे दहेज की चिंता ना करें। मैं आपके साथ रहकर आपके बुढ़ापे का सहारा बनूँगी। अगर फिर भी आपको लगता है कि मैं आप पर बोझ बनूँगी तो आप इस ऑपरेशन पर भी खर्चा मत करना .. मैं ही भगवान जी से कह दूंगी कि मेरी मां मेरा मरा मुँह देखे।
पत्नी - नहीं, नहीं मेरी बच्ची नहीं, ऐसा मत बोल। रोहित- रोहित (रोती है) रोहित, रोहित, रोहित प्लीज मैं..म..मैं ऐसा नहीं कर सकती। मैं मैं ऐसा नहीं होने दूंगी, मैं मर जाऊगीं पर, पर इस बच्ची को नहीं मरने दूंगी मैं।
पति - अरे मरती है तो मर जा। मैं बच्ची को नहीं होने दूंगा।
पत्नी - आह! आह! (रोती है) आह! आह! आह!
बेटी भ्रूण - मां मेरा दम घुट रहा है। मुझे बाहर निकालो।
पत्नी - अरे पगली बाहर आ कर भी क्या करेगी तू ? ये दुनिया तेरे लायक नहीं है।
बेटी भ्रूण - मां मै आप को देखना चाहती हूँ। पापा को देखना चाहती हूँ। भगवान की बनाई इस खूबसुरत दूनिया को देखना चाहती हूँ।
पत्नी - अब ये दुनिया इतनी खूबसुरत नहीं रही मेरी बेटी। बाहर आकर तू किसके साथ खेलेगी क्योंकि यहाँ, यहाँ रोज हजारों लड़कियां पेट मे ही मार दी जाती हैं। और जो बच जाती हैं, वो, वो भी आजाद कहां हैं? बाहर आओगी तो,तो मेरी ही तरह धक्के खाओगी। (रोती है)
बेटी भ्रूण - पर मां अन्दर मुझे बहुत डर लग रहा है।
पत्नी - बाहर, बाहर इससे भी ज्यादा डरावना है मेरी बच्ची। बाहर बहुत डरावना है। ऐसे डर में जीने से तो अच्छा है तू, बाहर ही मत आ मेरी बच्ची। तू बाहर ही मत आ। मत आ, मत आ तू , मत आ,मत आ तू बाहर ही मत आ। (रोती है)

(गीत बजता है)
अंगना में ऐसे खिले ..... धुप की चिड़िया

अखियों में ऐसा ..... खेले रुप तेरा गुड़िया
साथी ना संगी कोई सखी ना सहेली .... किन संग खेलेगी तू लाडो अकेली .. बंद है किवडिया .. . खिड़की पे सांकल ..... बाहर आकर क्या करेगी पागल
हो हो ना ऐसे देश मेरी लाडो ... ना आना ऐसे देश मेरी लाडो
हों चाहे दिल के टुकड़े हजार .. . ना आना ऐसे देश मेरी लाडो

पति - ज्योति,ज्योति ! क्या हुआ ज्योति, क्या हुआ? अरे,कुछ तो बोलो। ज्योति। हैलो,हैलो डाक्टर, प्लीज कम फास्ट। प्लीज ज्योति, ज्योति कुछ तो बोलो। अरे ज्योति कुछ तो बोलो....। कुछ तो बोलो। ज्योति कुछ तो बोलो।
(सायरन बजता है)
डॉक्टर (लड़की की आवाज) - सॉरी मिस्टर रोहित, सी इज डेड।
पति - नहीं, नहीं, नहीं ज्योति, नहीं ज्योति तुम ऐसा नहीं कर सकती। तुम मुझे छोड़कर नहीं जा सकती। अरे मुझे बेटा नहीं चाहिए। मुझे तुम चाहिए। मुझे तुम चाहिए। ज्योति, ज्योति तुम मुझे छोड़कर नहीं जा सकती। नहीं, नहीं जा सकती मुझे छोड़ के। नहीं जा सकती तुम मुझे छोड़ के नहीं जा सकती। (रोता है) हे भगवान ये तूने मुझे इतनी बड़ी सजा क्यों दे दी। अरे मुझे बेटा नहीं देना था तो ना देता। मेरी ज्योति को क्यों छीन लिया। मेरी ज्योति को क्यों छीन लिया .....(रोता है)..आ !हा ! हा!..... मेरी ज्योति को क्यों छीन लिया ,...

पति - आप कौन?
बेटी - मैं बेटी हूँ .....(आवाज गूँजती है) - (बेटी हूँ ....बेटी हूँ ....बेटी हूँ ...)
पति - बेटी !
बेटी - हाँ, मैं ही लक्ष्मी हूँ, मैं ही सरस्वतीं, मैं ही दुर्गा हूँ, मैं ही काली, मैं ही शीतला भी हूँ, और मैं ज्वाला भी, मैं ही पार्वती हूँ, और मैं ही संतोषी, और मैं ही हूँ अन्नपूर्णा।
पति - आप सब !
बेटी - हां, ब्रह्मा जी ने हम सब को मिलाकर ही बेटी को बनाया, ताकि मैं लक्ष्मी बन कर तुम्हे सुख समृद्धि दूं, मैं सरस्वती बन कर तुम्हे ज्ञान दूँ, मैं पार्वती बन कर तुम्हे स्वाभिमान दूँ, दूर्गा बनकर तुम्हे शक्ति दूँ, काली बन कर तुम्हारे दुखों का नाश करूँ, शीतला बन कर तुम्हारे जीवन में शांति लाऊँ, ज्वाला बन कर तुम्हारे जीवन में रोशनी लाऊँ और अन्नपूर्णा बन कर तुम्हारी जिदंगी को खुशहाल बनाऊँ। और तुमनें, तुमनें हमारी जिन्दगी को कोख में ही खत्म कर दिया। हमारा कुसूर क्या था? अरे हम तो तुम्हे कुछ देने ही आ रहे थे क्योंकि तुम ही हमारे मंदिरों में आते हो , झोली फैलाते हो और तुम ही कोख में हमारी कब्र बनाते हो ! तुम जैसे लोगों को हमारे मन्दिरों में आने का कोई हक नहीं है। जो मंदिर में आकर चुनरी उढ़ाते हैं ओर कोख में ही हमारी बलि चढ़ाते हैं। हम तुम जैसे लोगों के घर अब कभी नहीं आयेगीं। कभी तुम जैसे लोगों पर खुशियां नहीं बरसायेंगीं। कभी नहीं।
पति - मुझे माफ कर दो। मैं डर गया था। मैं आजकल के हालात देख के डर गया था।
बेटी - हालात को दोष मत दो मूर्ख। ये हालात भी तुम जैसे गंदी सोच के लोगों ने बनाये हैं। अगर इतना ही डर था तो अपनी मां को क्यों नहीं मारा। अपनी बहन को क्यों नहीं मारा। अपनी बीवी को क्यों नहीं मारा। हमें ही क्यों मारा? डर तुम्हे लग रहा था, तो तुम मरते हमें क्यों मारा?
पति - बेटे के मोह में। क्योंकि बेटा वंश चलाता है।
बेटी- अरे मूर्ख अगर बेटा वंश है तो बेटी अंश है। अगर बेटा आन है,तो बेटी गुमान है। अगर बेटा दवा है, तो बेटी दुआ है। अगर बेटा गीत है, तो बेटी संगीत है। और और अगर बेटा भाग्य है, तो बेटी भाग्य विधाता है। अरे यहां सबको मां चाहिए, बहन चाहिए,

बीवी चाहिए। मगर बेटी क्यों नहीं चाहिए। जबकि ओस की बूंद सी होती हैं बेटियां। मां-बाप को जरा सा भी दर्द हो, तो रोती हैं बेटियां। रौशन करता है बेटा सिर्फ एक कुल को। दो-दो कुलों की लाज ढ़ोती हैं बेटियां। फिर भी, फिर भी किसी को नहीं चाहिए बेटियां। क्यों? क्यों नहीं चाहिए बेटियाँ ?. . . है किसी के पास इस बात का जवाब - बेटियां क्यों नहीं चाहिए? हमारा क्या कुसूर है? आखिर कुसूर क्या है हमारा ? (रोती है) (अ! ह! ह!) क्यों मारना चाहता है हमें? क्यों नहीं चाहिए बेटियाँ ? क्यों नहीं ? हमारा कुसूर क्या है? क्या है हमारा कुसूर ?

पति - कोई गल्ती नहीं है। मुझे माफ कर दो। मुझे माफ कर दो मेरी बच्ची, मुझे माफ कर दो। तुम्हारी कोई गल्ती नहीं है। तुम्हारी कोई गल्ती नहीं है।
पत्नी - रोहित, रोहित, रोहित, रोहित उठो। अरे ! क्या हुआ क्या? उठो रोहित। नींद में क्यों चिल्ला रहे हो।
पति - अरे! अरे तुम ! तुम, तुम जिन्दा हो?
पत्नी - जिन्दा ! हां , म..मुझे क्या हुआ है?
पति - हे भगवान तेरा लाख-लाख शुक्र है। तुम सचमुच जिन्दा हो?
पत्नी - अ..ह.. हां, पर हुआ क्या ?
पति - व..वो कहाँ गई?
पत्नी - वो! वो कौन ?
पति - मेरी बेटी, मेरी, मेरी होने वाली बेटी।
पत्नी - बेटी ! पर, पर तुम्हें तो बेटा चाहिए था ना !
पति - नहीं ज्योति नहीं। अब मैं समझ गया हूँ। बेटा और बेटी एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, जिसके बगैर इस जिन्दगी की गाड़ी नहीं चल सकती। अगर हमें अपने भविष्य को उज्जवल बनाना है तो पहले हमें बेटी को बचाना है। बेटा और बेटी को बराबरी का दर्जा देकर इस इस जिंदगी को खुशहाल बनाना है।
पत्नी - हां रोहित। तुम,तुम बिल्कुल ठीक कह रहे हो। बेटियां तो मां-बाप की रानियां होती हैं। मीठी-मीठी, प्यारी-प्यारी कहानियां होती हैं। हमें इन्हें इस दुनिया में लाना ही होगा। इस दुनिया को अगर बचाना है तो हमें इन्हे बचाना ही होगा। हम सब को मिलकर इन्हें बचाना होगा।.... है ना रोहित ?
पति - तुम ठीक कहती हो ज्योति। इसकी शुरुआत हम करेंगे। उम्मीद है कि सब लोग हमारा साथ देगें।
(ताली बजती है)
(गीत बजता है)
ये लड़कियां तो मांओं की रानियां हैं
मीठी-मीठी प्यारी-प्यारी कहानियां हैं
इन का राम है रखवाला- इनका बचपन भोला-भाला
भोली-भोली सी इनकी जवानियां हैं- सबके दिल की सारे घर की ये रानियां हैं।
ये चिड़ियां एक दिन फुर से उड़ जानियां हैं।
कोई इनका हाथ ना छोड़े दिल ना तोड़े- ये सच्चे रब दी मेहरबानियां हैं
ये बेटियां तो बाबूल की रानियां हैं- मीठी-मीठी प्यारी-प्यारी कहानियां हैं

अंकल मैं आपको हँसते हुए अच्छी लगती हूँ ना। प्लीज हमें मत मारिये। हमें जीने दीजिए। प्लीज।
(ताली बजती है)